श्री राम कथा का तात्विक विवेचन

10 सितंबर । युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ की 53वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की 8वीं पुण्यतिथि पर साप्ताहिक समारोह के अंतर्गत श्री गोरक्षनाथ मंदिर में चल रहे सप्त दिवसीय "श्री राम कथा का तात्विक विवेचन" के चौथे दिन कथा व्यास अशर्फी भवन अयोध्या के पीठाधीश्वर अनंतश्री विभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य श्री श्रीधराचार्य जी महाराज ने व्यास मंच से कहा कि

भगवान प्रेम के भूखे होते है, प्रेम से भक्त अपने भगवान से जो चाहे करवाता है ,वह सब कुछ भगवान भक्त के लिए करने लगते हैं । उन्होंने "लोग कहते हैं भगवान खाते नहीं कोई शबरी के जैसा खिलाता है "भजन गाकर भक्त और भगवान की प्रेममयी भाव का वर्णन किया।

प्रयागराज की महिमा बताते हुए कहते हैं कि 63 करोड़ तीर्थों के राजा प्रयाग है। प्रयाग में निरंतर यज्ञ होते रहते थे इसलिए उसका नाम प्रयाग पड़ गया। प्रयाग तीर्थों का राजा है इसलिए उसके पास राजा के 3 चिन्ह भी है। प्रयाग में मां गंगा की विस्तृत भूमि जहाँ कुंभ लगता है वह सिंहासन है वहां पर विद्यमान अक्षय बट उनका छत्र है तथा चामर के रूप में गंगा और यमुना दोनों नदियों के प्रवाहमान तरंगे है ।

कथा व्यास ने कहा कि भगवान प्रत्येक जीव के में आकर स्थित होकर सबका नियमन करते हैं और जठराग्नि बनकर सबका खाया पिया पचाते है।समुद्र में बड़वानल बनकर संपूर्ण बरसात के जल को जलाते रहते हैं जिससे धरती सुरक्षित बनी रहती है ।

मन के बारे में बताते हुए कथा व्यास ने कहा कि मन ही मनुष्यों के बंधन और मोक्ष का कारण होता है।हमारे मन को ब्रह्माजी ने बहिर्मुखी बनाया ही इसलिए मन हमेशा बाहरी विषयों में भागता रहता है। उस मन को नियंत्रण में रखना ही भजन का प्रयोजन है।मन को ध्यान में लगाना चाहिए जिससे धीरे-धीरे मन एकाग्र होता है । एकाग्र मन में भगवान का प्रतिबिंब होता है। उन्होंने "मन की तरंग मारलो बस हो गया भजन "के द्वारा मन की महत्ता तथा उसके नियंत्रण से लाभ को बताया।

शरीर के निर्माण के विषय में बताते हुए उन्होंने कहा कि जिस तत्व से ब्रह्मांड का निर्माण हुआ है उसी पांच तत्व से शरीर रूपी पिंड का भी निर्माण हुआ है। ब्रह्मांड में विद्यमान सब कुछ हमें मिल सकता है बस अपने मन को बाहर के विषयों से हटाकर स्वयं में लगा लिया जाए। कुछ भी अप्राप्त नहीं रह जाएगा।

प्रयागराज से भगवान चित्रकूट पहुंचते हैं वहां का रमणीय वातावरण देख कर उस तीर्थ को प्रणाम करते हैं और माता सीता से कहते हैं कि मैंने बनवास में आकर दो फल प्राप्त किया है पहला यह कि पिताजी को उनके द्वंद से छुटकारा दिलाया है दूसरा कि भाई भरत को कुछ प्रसन्नता दे सका।

चित्रकूट में भगवान सानंद विराजते हैं तो वह स्थान बैकुंठ हो जाता है तथा जिस अयोध्या को छोड़कर भगवान गए हैं वह मृत्युलोक हो जाता है। उस मृत्युलोक में मुमुक्षुजीव के रूप में भारत रहते हैं जो अर्चिरादि मार्ग के रूप में वन मार्ग से होते हुए भगवान से मिलने चल पड़ते हैं । रास्ते में निषादराज गुहा से भेंट होती है जो भरत को भगवान के बारे में बताते हैं। आगे भारद्वाज ऋषि का आश्रम पड़ता है सब लोग पहुंचकर विश्राम व भंडारा करते हैं । वहाँ सब सुख सुविधाओं को पाकर अयोध्यावासियों का मन आनंदित हो जाता है और वे सभी कहते हैं कि अब हम कहीं नहीं जाएंगे यही आनंद लेंगे। दोनों भाइयों राम व भारत का मंगल हो । ऐसा कहते हुए आनंद लेने लगे किंतु भरत लाल जी न कुछ खाया न कुछ पिया न हीं विश्राम किया । बस भगवान राम का ध्यान करते रोते रहे ।

"भरत चले चित्रकूट हो रामा, राम को मनाने" भजन गाकर मंत्रमुग्ध कर दिया। दूसरे दिन सुबह भरत चित्रकूट के लिए निकल पड़े। भरत जहां जहां जाते हैं वहां मेघ छाया करते है। पृथ्वी नरम हो जाती है,हवाएं शीतल हो जाती है, पूरी प्रकृति उस भगवान के परम भक्त की सेवा में लग जाती है।

भरत को सेना के साथ आता देखकर लखनलाल का क्रोध फूट पड़ता है । भगवान राम से कहते हैं कि मैं भरत का बध कर दूं। भगवान उन को समझाते हैं और कहते हैं कि भरत मेरा भाई उसे मेरी याद आई होगी इसलिए आरहा होगा ।उसका स्वागत करना चाहिए ।

उन्होंने "मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में "गाकर श्रोताओं को भरत का भगवान राम के प्रति भाव को बताया । श्री भारत और श्री राम के मिलन के करुणिक दृश्य का इस प्रकार से वर्णन कथा व्यास ने किया कि श्रोताओं की आंखों से आंसू निकल पड़े ।

कथा का प्रारंभ व्यास मंच के पूजन तथा समापन आरती एवं प्रसाद से हुआ। संचालन डॉक्टर श्री भगवान सिंह ने किया इस अवसर पर योगी कमलनाथ जी, महाराज महंत रविंद्र दास जी , महंत गंगादास, अवधेश सिंह, संजय सिंह, महेश पोद्दार, अजय कुमार सिंह, डॉ अरविन्द चतुर्वेदी, बृजेश मणि मिश्र , प्रांगेश कुमार मिश्र, डॉ रोहित मिश्र,अश्वनी त्रिपाठी , विनय गौतम आदि उपस्थित रहे।